अध्याय छटा

भूमिजा का मूल्यांकन

अध्याय छटा

भूमिजा का मूल्यांकन

संस्कृत, मैथिली और हिंदी इन तीन अत्यंत संपन्न काव्य परंपराओं के उन्नत संस्कारों का पुंजीभूत रूप है, कवि शिरोमणी नागार्जुनजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व। नागार्जुन जब चार वर्ष के थे तब इनको माता का स्वर्गवास हो गया। पिता के एक मात्र संरक्षण में वे रहे जो अत्यंत रूढिवादी, दरिद्र, संस्कार हीन तथा वज्र कठोर थे। उनके आस पास का परिवेश अंधविश्वास और सामाजिक रूढि-रीतियों से ग्रासित था। अतः बाल्य काल से ही उनके मन में एक विद्रोह की भावना ने जन्म लिया।

नागार्जुन के व्यक्तित्त्व को निखारने में उनके व्यकितगत जीवन के कटु संघर्षो के अलावा उस प्रगतिशील और वैज्ञानिक विचार-दर्शन का योग भी है, जिसकी प्रारंभिक दीक्षा उन्हें स्वामी सहजानंद से मिली। जिसने उनके जीवन के निर्णायक और नाजूक मोड पर एक नया पथ-प्रदर्शन किया। उनकी आस्था तथा संकल्प को अपनी तरफ से बल दे दिया और उन्हे जीने का एक अलग तरह का मकसद दिया। एक भरे-पूरे परिवार के बोझ को भी महज बुध्दिजीवी लेखक बन कर सँभालना, और अपने रचनाकार को भी जीवित रख पाना, आसान बात नहीं है। विरले प्रेमचंद ही ऐसा कर पाते हैं, और नागार्जुन ने भी ऐसा किया है। परिवार के बोझ को उन्होंने उठाया ही और वह भी आत्मसम्मानी और स्वाभिमानी रचनाकार बनकर।

कविवर नागार्जुन एक समर्थ रचनाकार ही नहीं, वत्सल पिता, परिवार के जिम्मेदार पालक, स्वजनों और मित्रों के सच्चे आत्मीय भी हैं। उनका परिवार भी उनके अपने औरस पुत्र-पुत्रियों तक ही सीमित नहीं, उन मानसपुत्रों तक विस्तृत हैं, जिन्हें उन्होंने अपनी कृतियों में जन्म दिया है। उनका अभिन्न अंग वे लोक, वे घर और वे परिवार भी है, अपने साठ वर्षीय जीवन में जिनके संपर्क में वे आए हैं। प्यार से लोग उन्हें "बाबा" कहते हैं, और नागबाबा की यह सरलता, सादगी तथा निश्चल आत्मीयता ही हैं, जो उन्हें वे कहीं भी हो, इन लोगों, इन घरों और इन परिवार से जोडे रहती है। हजारो पुत्रियों और परिवारों के मुखिया नागबाबा सबसे जुडे हुए, सब पर अपना नेह-छोह बरसाते रहते है। इस विशाल दायित्व का निर्वाह करते हुए उन्होंने बहुत कुछ पाया और बहुत कुछ लुटाया भी है।

सरलता, सादगी और सौम्यता के साथ-साथ उनके व्यक्तित्त्व में वज्र-कठोर दृढता भी है, अन्यथा जीवन की कठोर वास्तविकताओं से टकराकर वे कब के चूर-चूर हो जाते। जीवन के काँटो भरी राहों पर चलते समय उनके कदम कभी भी डगमगा नहीं गये। इस राह पर चलते समय उन्होंने अपने व्यक्तित्त्व और रचनाकार दोनों को शान से जीवित रख दिया। मेधावी तथा सहजस्फूर्त प्रतिभा के धनी, उनकी हर एक बात उनके अंतर की कोमलता और वज्र कठोर दृढता के साथ-साथ उनकी अद्‌भुत पैनी बुध्दि का प्रमाण देती है। विद्रोह उनके स्वभाव और चरित्र में मूर्तिमान है। यह विद्रोह उस परिवेश की देन है, जिसके बीच उन्होंने जीवन जीया है, परंतु अपने अंतर की इस विद्रोह वृत्ति को उन्होंने सदैव रचनात्मक दिशाओं की ओर सक्रिय किया है। हँसमुख इतने की उनके जीवन संघर्षो से अपरिचित व्यक्ति शायद ही यह जान पाए कि जीवन के कटू अनुभव पीने और पचाने के बाद यह हँसी उन्हें सौगात के रूप में मिली है। एक ओर शिशुओं जैसी सरलता तो दुसरी ओर विद्रोह करने की प्रवृत्ति यह उनके व्यक्तित्त्व के दो विरोधी छोर है परंतु उन्होंने अपने व्यक्तित्त्व में उन्हें इस प्रकार अंतर्भूत कर लिया है कि एक की संगति में ही दूसरा अपनी सार्थकता प्राप्त करता हैं।

कृतित्त्व की दृष्टि से :-

नागार्जुनजी मैथिली और हिन्दी भाषा के तो सुपरिचित रचनाकार हैं ही, देव भाषा संस्कृत में भी उन्होंने काव्य रचना की है। "धर्मालोक-शतकम्" सिंहली लिपी में प्रकाशित, उनके द्वारा रचित, संस्कृत का लघु काव्य है। इसके अतिरिकत "देश-दशकम्", "कृषक-दशकम्", "श्रमिक-दशकम्" शीर्षक संस्कृत लघु-काव्य भी उन्होंने रचे हैं।

नागार्जुन की कविता की केन्द्रीय विशेषता मानवीय जीवन से उसकी गहन संपृक्ति है। उसकी बहुरंगी भाव-राशि का अक्षय स्त्रोत अत्यंत भरा-पूरा, यह अनन्त रूपात्मक वस्तुजगत् ही है, जिसे उसके समूचे वैविध्य, संपूर्ण प्रसार एवं समूची सघनता में कवि ने आत्मसात किया है, और अपनी कविता में उसे अभिव्यक्ति दी है।

नागार्जुन का काव्य मानवीय और मानवीय अनुभूतियों का काव्य हैं। मानवीय जीवन के सारे सुख-दुख, आशाएँ, आकांक्षाएँ सुंदरता-विरूपता उसमें प्रतिबिम्बित है। वे इसीलिए अपनी संवेदनाओं में इतने जीवंत और अपनी अभिव्यक्ति में इतने पैने हैं कि अनायास सारी पर्ते चीरते हुए मन की गहराइयों में उतरते चले जाते हैं। मानवीय जीवन को इतनी निर्बाध स्वीकृति बिरले कवियों के काव्य में ही मिल सकी है।

नागार्जुन की कविता जीवन के विष और जीवन के अमृत - दोनों में ही आकंठ सराबोर कवि की कविना है। जीवन के विष को उन्होंने भारतेन्दु और निराला की भाँति निर्विकार पिया और पचाया है, और अमृत उसे दोनों हाथ मनुष्यता के हित के लिए कविता के रूप में डाला है। नागार्जुन की कविता एकमात्र मानव-जीवन के प्रति समर्पित है - उसका संदर्भ देश की धरती हो, देश की जनता हो, देश का जीवन हो अथवा धरती और मनुष्य मात्र अपने सारे सुख-दुख, हर्ष-विषाद आदि के लिए एक स्वस्थ-सुन्दर, भरे-पूरे जीवन के लिए

संघर्ष करता मनुष्य। देश धरती तथा मनुष्यता के अतिरिक्त वह किसी के प्रति जवाबदेह नहीं है।

नागार्जुन की कविता की एक अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता उसकी प्रखर सामाजिकता है। प्रखर सामाजिकता का यह संदर्भ जिसका स्त्रोत नागार्जुन के प्रगतिशील वैज्ञानिक विचार-दर्शन में निहित है, नागार्जुन की कविता को मात्र जीवन को स्वीकृति देनेवाली कविता के रूप में ही नहीं जीवन को बदलनेवाली कविता के रूप में प्रतिष्ठा देता है। अपनी प्रखर सामाजिकता तथ प्रगतिशील विचार-दर्शन के आलोक में ही नागार्जुन ने विश्व की शोषित-पीडित मनुष्यता का पक्षधर होते हुए, उसके लिए सामाजिक परिवर्तन की, एक स्वस्थ और सुंदर समाज-रचना की माँग की है। इसी भूमि से उन्होंने वर्तमान जीवन में व्याप्त व्यवस्था-जन्य विषमता, दुख-दैन्य, शोषण, युध्द, हिंसा, अन्याय, अत्याचार आदि की भर्त्सना करते हुए जन-सामान्य और उसके मंगलमय भविष्य के प्रति अपनी हार्दिक आत्मीयता को अभिव्यक्ति दी है। नागार्जुन की कविता इसी अर्थ में समाज-केन्द्रित, लोक-केन्द्रित, मनुष्य-केन्द्रित जनता के कवि की, जनता के लिए लिखी कविता है।

निष्कर्षता हम कह सकते हैं कि व्यक्ति से लेकर समाज और राष्ट्रीय भूमिका से लेकर अंतर्राष्ट्रीय क्षितिजों तक मानवीय जीवन के साथ-साथ, मानवीय जीवन की चिरसहचरी प्रकृति के लघु और विराट सभी रूपों तक, नागार्जुन की कविता का अत्यंत विस्तृत प्रसार है, जिन्हें चंद पंक्तियों में समेटा नहीं जा सकता।

"भूमिजा" का प्रबंधकाव्य :-

हिन्दी साहित्य में नव-सांस्कृतिक प्रबंध परंपरा का सृजन सन 1947 से प्रारंभ हुआ। इससे पूर्ववर्ती युग की "आदर्शवादी प्रबन्ध-काव्य-परम्परा" स्वातंत्र्योत्तर युग में भी अखंड रूप से प्रचलित एवं विकसित हो रही है। यह एक तथ्य है कि 1980 तक लगभग डेढ़ सौ प्रबन्ध-काव्य प्रकाशित हुए हैं जो न केवल इस परम्परा के अस्तित्त्व के अपितु उनकी जीवन्तता, शक्तिमता एवं विकासोन्मुखता को भी प्रमाणित करते हैं। कुछ आलोचक कई बार इनके अस्तित्त्व को गौण करने

के लिए यह भी तर्क देते हैं कि "अब प्रबन्धात्मक काव्यों का युग बीत गया", उनसे हमारा यही निवेदन है कि "रामचरितमानस", "कामायनी", "कुरुक्षेत्र" एवं "उर्वशी" जैसे रचनाएँ किसी युग विशेष की अस्थिर एवं परिवर्तनशील रुचि एवं प्रवृत्ति पर आधारित नहीं होती, अपितु वे सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक संपूर्ण मानव जाति के सामान्य भावों, रागात्मक वृत्तियों एवं सर्वसामान्य मूल्यों पर आधारित युग-युग की शाश्वत रचनाएँ होती हैं। रही बात "युग बीत जाने वाली बात" जो केवल उन्हीं रचनाओं पर लागू होती है जो युग-विशेष की तात्कालिक संकीर्ण एवं अस्थिर वृत्तियों पर आधारित होती है।

स्वातंत्र्योत्तर प्रबंध काव्यों की शृंखला में नागार्जुनजी ने भी "भूमिजा" नामक खंडकाव्य लिखकर एक कडी जोड दी है, जिसका अपना महत्व है। प्रबंध काव्य की परंपरा में अधिकतर पौराणिक प्रबन्ध काव्य "रामायण" से लिए गये हैं। नागार्जुन के पूर्व रघुवीर शरण "मित्र" द्वारा "भूमिजा" (1961) काव्य रचा गया था। इसमें सीता निर्वासन के पश्चात श्रीराम के अनुताप एवं उनके मानसिक द्वंद की भी अभिव्यक्ति की गयी है तथा अंत में सीता के भूमि में समा जाने के प्रसंग को विशेष रूप से प्रस्तुत किया गया है। यह प्रबंध काव्य आठ सर्गों में विभाजित है।

आधुनिक हिन्दी काव्यधारा के प्रगतिवादी काव्य के उन्नायक कवि नागार्जुनजी ने प्रबंधकाव्य के रूप में "भूमिजा" का सफलतम सृजन किया है। साहित्य के प्रमुख भेदों में से पद्य अर्थात काव्य सबसे अधिक रोचक होता है। छंदोबध्द रचना पद्य कहलाती है। इसमें एक नियमित गति या लय रहती है। प्रबंध काव्य की रचना तो कथासूत्र से बध्द होती है। नागार्जुनजी ने प्रबंधकाव्य के सभी लक्षणों का सफलता से निर्वाह करते हुए "भूमिजा" खंडकाव्य लिखा हैं। "भूमिजा" में खंडकाव्य के सभी लक्षण दिखाई देते हैं।

सामान्यता खंडकाव्य में जीवन के एक ही पक्ष का चित्रण होता हैं। आज के बदलते परिवेश के लक्ष्य काव्यों के लक्षणों में थोडा बहुत परिवर्तन हो

जाना स्वाभाविक हैं। नवयुग में आकर यह काव्यरूप, जो और भी सज गया और बदल गया उसको विशेषताओं को ध्यान में रखने पर "भूमिजा" में वे सभो लक्षण दिखाई देते हैं।

1· "भूमिजा" की कथावस्तू सीता को सामने रखकर हो लिखो है। सीता को धरती माता में समा जाना ही इसी कथावस्तू का चरमोत्कर्ष है। विख्यात रामायण के इसी मार्मिक पक्ष का अत्यंत सफल चित्रण कविवर नागार्जुनजी ने किया है।

2· "भूमिजा" का कलेवर 44 पृष्ठों तक ही सीमित है। अतः इस खंडकाव्य का कलेवर लघु है तथा इसमें अवांतर कथाओ - घटनाओं का परित्याग नागार्जुनजी ने किया है।

3· इसमे रामायण जैसे महाकाव्य में सी सिर्फ "भूमिजा" यानी सीता की कथा को महत्त्व दिया है। इसमें कथासंगठन तथा एकान्विति दिखाई देती है।

4· "भूमिजा" खंडकाव्य अपने आप में संपूर्ण है। इस खंडकाव्य में शुरू से अंत तक प्रभावोत्पादकता बनो रही है।

5· "भूमिजा" में प्रमुख तथा अन्य गौण पात्रों का भी सफल चरित्र चित्रण हुआ है। देश-काल-वातावरण तथा प्रकृति चित्रण में नागार्जुनजो को अच्छो सफलता मिली है।

6· "भूमिजा" की संपूर्ण कथावस्तु को कवि ने तीन प्रसंगों में गुंफित किया है। ये प्रसंग कही भी बिखर नहीं गए हैं।

7० इस खंडकाव्य को नागार्जुनजी ने मुक्त छंद में रचा है।

8· खंडकाव्य का लक्ष्य काव्योद्देश्य की सिध्दि होती है। "भूमिजा" में

भी इस सिध्दि की पूर्ति हुई हैं।

9. "भूमिजा" का नामकरण इस खंडकाव्य की नायिका सीता के निर्वासन के प्रसंग को ध्यान में रखते हुए किया है।

10. "भूमिजा" खंडकाव्य में कवि नागार्जुनजी ने किसी रस विशेष का परिपाक न दिखाकर उदात्त भाव का चरम सौंदर्यमात्र दिखाया है।

निष्कर्षता - हम कह सकते है कि "भूमिजा" खंडकाव्य प्रबंधकाव्यों के सभी लक्षणों का निर्वाह करता हुआ लिखा गया कविवर नागार्जुनजी का एक श्रेष्ठतम एवं कलात्मक खंडकाव्य है।

भूमिजा का कथासूत्र :-

"भूमिजा" की पूरी राम-कथा को अभिव्यक्त करने के लिए कवि नागार्जुन ने चतुर जौहरी की भाँति राम-कथा के विविध स्वर्णिम प्रसंगो में से उन तीन प्रसंगों को ही चुना है, जो खुद ही बन गये हैं। सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर पता चल जाता है कि इन प्रसंगो में अन्य दो प्रसंग भी आये हैं, जिनका संबंध रामायण से है। ये सभी महत्त्वपूर्ण प्रसंग तथा घटना क्रमशः इस तरह है - महर्षि विश्वामित्र द्वारा महायज्ञ की रक्षा के लिए राम-लक्ष्मण का वन जाना, अहल्या का राम द्वारा उध्दार, राम द्वारा सीता का त्याग तथा सीता की व्यंग्यपूर्ण कडी आलोचना करना, अगला प्रसंग लव-कुश के विकास तथा उनके भविष्य का जो त्रिजटा देखती हैं, अंतिम प्रसंगा जो बड़ा ही हृदयद्रावक है, महाकवि वाल्मीकि द्वारा रामकथा का उपसंहार तथा सीता के बिना अकेलेपन का एहसास है। इन प्रसंगो को बडे ही स्वाभाविक शब्दावली में नागार्जुनजी ने बाँधा हैं।

कविवर नागार्जुनजी ने रामायण की विख्यात कथा से सिर्फ महत्त्वपूर्ण प्रसंगों को उठाया है, जो अयोध्या के राजतंत्रीय परिसर अथवा लंका-विजय यात्रा के कूटनीति भरे परिवेश से सर्वथा दूर लोकभूमि में घटित होते हैं। संपूर्ण "भूमिजा"

की कथा में गतिशीलता, रोचकता, प्रभावोत्पादकता विषाद का चित्रण बहुत सुंदर ढंग से कवि ने किया है। संपूर्ण कथावस्तु को कवि ने एक ही कथासूत्र में बाँधा है, जिससे अंत तक एकसूत्रता बनी रहती है।

चरित्र की दृष्टि से भूमिजा :-

कवि नागार्जुन ने सीता को केंद्र-स्थान में रखकर ही संपूर्ण "भूमिजा" काव्य की निर्मिति की है। सीता के चरित्र को उन्होंने विभिन्न रूपों में चित्रित किया है। सीता भूमिजा अर्थात धरती बेटी, आत्मबोध एवं आत्म-मर्यादावादी, साहसी, लोकधर्मी, नये युग की आकांक्षिणी, आदर्श माता है। कवि के शब्दों मे राम-कथा में सीता सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पात्र है। कथा विस्तार के केंद्र में वह ही प्रमुख हैं। सीता के परित्याग में नारी शोषण की व्यथा है।

सीता के बाद श्रीराम के चरित्रांकन में भी कवि को अच्छी सफलता मिली है। प्रारंभ के प्रसंग में राम लोकधर्मी रूप में मिलते है जो महायज्ञ में सहायता करते हैं तथा गौतम ऋषि के शाप से अभिशप्त पाषाणी अहल्या का उध्दार करते है। पर यही राम राजधर्मी बनने पर सीता की अग्नि परीक्षा लेते हैं तथा उसे पुनः वनगमन कराते है। यहाँ राम की एकपक्षीय मर्यादा और न्याय स्पष्ट होता है। ऐसे राम की सीता ने स्पष्ट शब्दों नें आलोचना की है। सीता ने ऐसे रामराज्य को राजधर्मियता को प्रधानता देते हैं, उनकी खिल्ली उडाते हुए नये युग के परिवर्तन की कल्पना की है। सच में राम का चरित्रांकन यहाँ कवि ने गौण रूप से किया है।

नागार्जुनजी ने मुनिवर वाल्मीकि को एक आदर्श शिक्षक, कवि, पिता, ममता, ध्येयवादी इन्सान के रूप में चित्रित किया है। अंत में उनके अकेलेपन का बड़ा ही प्रभावपूर्ण चित्रण हुआ है। इसके साथ लक्ष्मण, लव-कुश, त्रिजटा, विश्वामित्र तथा अहल्या आदि का प्रसंगानुसार यथार्थ चित्रण बडी कुशलता से किया है।

देश-काल-वातावरण तथा प्रकृति चित्रण में भी नागार्जुनजी को अच्छी सफलता मिली है। विशेषतः प्रकृति चित्रण तो संपूर्ण काव्य में पृष्ठभूमि के रूप में समाया हैं।

इसप्रकार "भूमिजा" की पात्रयोजना अत्यंत सफल तथा रोचक रही है।

शीर्षक की सार्थकता :-

कविवर नागार्जुन ने रामायण की विख्यात कथा से सिर्फ महत्त्वपूर्ण प्रसंगों को उठाया है जो राम के राजनैतिक जीवन से संबंधित नहीं हैं। इस खंडकाव्य का नामकरण "भूमिजा" अत्यंत मार्मिक एवं उपयुक्त है। ऐसी किवदंति है कि सीता का जन्म धरती माँ की कोख से होता है। एक हलवाहा अपने खेत में हल जोत रहा था। अचानक बैल रूक गये। हलवाहें ने नीचे झुककर देखा तो हल की नोक से ठक्कन से ठका एक ठोस घड़ा निकला। उसी घडे से सीता निकली। राजा जनक को कोई संतान नही थी इसलिए वे ही उसके पालनहार बने। वहाँ उसे इतना प्यार मिला कि सभी उसे जानकी ही कहने लगे। यह रहस्य केवल एक धाई ने सीता को दस बार बताया था। अतः वह भूमिजा है।

सीता जब अंत में अयोध्या वापस आयी तो वहाँ भी कुछ लोग मौन रहकर उसकी चारित्रिक पावनता पर संदेह करने लगे तो सीता को धक्का लगा और उसने अपनी प्यारी धरती माँ को पुकारा कि, "हे माँ। मुझे अपने में समा ले।" सचमुच उसी क्षण धरती में दरार पड़ी सीता उसमे समा गयी। इसलिए भूमि से उत्पन्न सीता भूमि में ही विलीन हो गयी। अतः इस खंडकाव्य का शीर्षक "भूमिजा" ही उपयुक्त एवं श्रेष्ठ है। इस शीर्षक से ही कथा का विषय झट से पाठकों की समझ में आता है। शीर्षक अत्यंत संक्षिप्त, विषयानुकूल, पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल एवं सारगर्भित है। संक्षेप में "भूमिजा" शीर्षक अत्यंत कलात्मक, समर्पक, मार्मिक, सार्थक एवं उपयुक्त है। निस्संदेह शीर्षक सार्थकता में कविवर नागार्जुन को अच्छी सफलता मिली है।

"भूमिजा" - काव्य - शिल्प की दृष्टि से :-

बहुरंगी भाव-छवियों के साथ-साथ नागार्जुन का काव्य-शिल्प भी बहुरंगी है। मुक्तक और आख्यानक दोनों प्रकार की कविताएँ उन्होंने लिखी हैं। लघु से लघु और दीर्घ से दीर्घ एक हजार पंक्तियों तक की कविता की उनके काव्य में स्थिति है। छन्दबध्द और मुक्त छंद-अभिव्यक्ति के इन दोनो प्रकारों में उनकी समान रूप से गति है। हिन्दी के अपने कवित्त, सवैया और बरबै जैसे छन्दों से लेकर आधुनिक से आधुनिक छन्द प्रयोग उनके काव्य में मिलते हैं। उनकी मुक्त छंद की कविताएँ भी इसी कारण सफल है कि उनकी निर्मिती किसी न किसी परम्परागत छन्द के आधार पर हुई है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी नागार्जुनजो ने अपने खंडकाव्य "भूमिजा" में मुक्त छंद का प्रचुर प्रयोग किया है। उन्होंने परंपरागत छन्दों को ठेठ मुहावरेदार शैलो में लिखकर लोकप्रिय बनाया है। अप्रचलित छन्द "बरबै" को कवि ने प्रचलित रूप दिया है, जिससे उनकी ज्ञान. प्रतिभा का साक्षात्कार हो जाता है। नागार्जुनजी की छंद-योजना भाव एवं भाषा के सर्वथा अनुकूल है। उसमें गति, ताल एवं लय का पूरा निर्वाह हुआ है। "भूमिजा" की छंद योजना में वैविध्यता के दर्शन होते है। इसप्रकार भूमिजा का "छंद-प्रयोग" अच्छा बन पडा है।

कवि की भाषा सुगठित-व्यवस्थित है। उनकी भाषा में एक जीवन-ताजगी प्राणवत्ता परिलक्षित होती है। प्रस्तुत काव्य में भाषा के विविध रूप हमारे सामने आते हैं। जैसे लाघवता, माधुर्य और प्रसाद गुण से ओतप्रोत, भावानुकूल भाषा, आदि। इसीप्रकार व्याकरण की दृष्टि से शुध्द, परिष्कृत और परिमार्जित शब्दचयन "भूमिजा" की एक खास विशेषता है। कवि ने मुहावरों तथा लोकोक्तियों का सहज-सरल प्रयोग किया है। मुहावरों का प्रयोग जान-बुझकर करने के बदले उनको सहज रूप से गढ़ने में नागर्जुनजो सफल हुये हैं।

"भूमिजा" काव्य में अलंकार-योजना भावानुकूल तथा प्रसंगानुकूल बनी है। खासकर उपमा, रूपक, प्रतीक, अन्योक्ति, यमक, श्लेष आदि अलंकारों का सहज-सुंदर प्रयोग किया है। कविवर नागार्जुनजी ने "भूमिजा" खंडकाव्य को अलंकारो से विधिवत सजाया है।

कवि को रस-योजना में भी अच्छी सफलता मिली है। "भूमिजा" खंडकाव्य में वीर रस प्रधान है। वीर रस के अलावा करूण, भयानक, शांता, वात्सल्य रौद्र आदि रसों का भी प्रसंगानुकूल सफल प्रयोग कर नागार्जुनजी ने खंडकाव्य में चार चाँद लगाये है।

अपने खंडकाव्य को अधिक सफल करने के लिए नागार्जुनजी ने कई शैलियों का सफल प्रयोग किया है। प्रस्तुत काव्य में भावात्मक शैली ही अधिक उभरकर सामने आयी है। इसके साथ-साथ कई अन्य शैलियाँ भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है, जैसे अलंकारिक शैली, चित्रात्मक शैली, वक्तात्मक शैली तथा परिचयात्मक शैली आदि।

"भूमिजा" में कई प्रतीकों का प्रयोग कविवर नागार्जुनजी ने किया है। इन्हीं प्रतीकों की सहायता से कई समस्याओं को प्रकट किया हैं। उन्होंने प्रतीकों के विविध रूप अपनाकर अपना खंडकाव्य सजाया है। व्यक्तिगत प्रतीक, सांस्कृतिक प्रतीक, पौराणिक प्रतीक, प्रकृति के प्रतीक आदि प्रतीकों की सहायता से आधुनिक समस्याओं को स्पष्ट किया है और जिसमे वे सफल भी हुए है।

प्रतीकों के साथ-साथ बिम्ब-विधान भी "भूमिजा" में पर्याप्त मात्रा में मिलते है। बिम्ब कविता का प्राणतत्व है। कविवर नागार्जुनजी ने अपनी अभिव्यक्ति को अधिकाधिक मार्मिक तथा मनोरंजक बनाने के लिए बिम्बों का सफल प्रयोग किया है। जैसे ऐंद्रिय बिम्ब, वस्तुपरक बिम्ब, राजनीतिक तथा सामाजिक बिम्ब, सांस्कृतिक बिम्ब और प्राकृतिक बिम्ब आदि। मानव-मन में उठनेवाले अनेक भाव तरंगों को कवि ने बिम्बों के माध्यम से एक नयी अभिव्यक्ति दी है।

निष्कर्षता :-

"भूमिजा" का समग्र मुल्यांकन करने के पश्चात हम यह कह सकते है, प्रबंध काव्यों के इतिहास में नागार्जुन का यह काव्य अपने आप में अनुठा तथा विख्यात है। खंडकाव्य के सभी लक्षण प्रस्तुत काव्य में विद्यमान है। नागार्जुनजी की भाषा बहुरंगी भाषा है - जनसाधारण की भाषा थी और पंडितो तथा काव्य रसिकों की भाषा थी। उन्होंने "रामायण" पर जैसे पौराणिक आख्यान से कुछ महत्वपूर्ण प्रसंग ही चुने है। कवि ने समाज के विशिष्ट वर्ग को ध्यान में रखकर खंडकाव्य का सृजन किया नहीं है। "भूमिजा" खंडकाव्य इतना सरल है, जिसे समाज का आम आदमी भी बिना कोइ कठिनाईसे पढ़ सकता है, समझ सकता है। अपने उदात्त उद्देश्य, सार्थक चरित्रांकन एवं सफल प्रकृति चित्रण के कला सौंदर्य के सभी पक्षों में प्रस्तुत काव्य कृति हिंदी खंडकाव्य धारा में विशिष्ट स्थान की अधिकारिणी है।